अनुक्रमणिका

प्राक्कथन	*iii-iv*
प्रस्तावना	*v-viii*
पृष्ठभूमि	*xi-xii*
मानचित्र सूची	*xiv*
रेखाचित्र सूची	*xv-xvi*
छायाचित्र सूची	*xvii-xxiv*
अध्याय – 1 : परिचय भौगोलिक पृष्ठभूमि, भू–भौतिकी, जल अपवहन प्रणाली, पारिस्थितिकी	1-44
अध्याय – 2 : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (प्रागैतिहासिक, आद्यैतिहासिक, ऐतिहासिक काल)	45-66
अध्याय – 3 शैलकला का प्रारंभिक अनुसंधान	67-94
अध्याय – 4 राजस्थान शैलकला : पुरास्थल (पहुँचमार्ग, भू–स्थिति, मानचित्र एवं क्षेत्रीय वर्गीकरण) परिशिष्ट : 1 राजस्थान में शैलकला पुरास्थल: क्षेत्रवार परिशिष्ट : 2 राजस्थान में शैलाश्रयों का सांख्यिकीय विवरण: क्षेत्रवार	95-164
अध्याय – 5 राजस्थान शैलकला : अध्ययन – 1 तकनीकी पक्ष	165-182
अध्याय – 6 राजस्थान शैलकला : चित्रित शैलाश्रय, चित्रण विषय, वर्गीकरण एवं विश्लेषण परिशिष्ट : 3 राजस्थान के शैलाश्रयों में चित्रांकन	183-336
अध्याय – 7 राजस्थान शैलकला : कालक्रम निर्धारण	337-354
अध्याय – 8 राजस्थान शैलकलाः शैलाश्रयों से सम्बद्ध पुरातात्विक सामग्री परिशिष्ट : 4 चित्रित शैलाश्रयों के समीपवर्ती क्षेत्र से प्राप्त पुरासामग्री एवं संभावित कालक्रमः	355-380
संदर्भ सूची	381-407

मानचित्र सूची

1. राजस्थान : उत्तर–पूर्वी राजस्थान

2. पूर्वोत्तर राजस्थान : बुचारा बांध क्षेत्र में शैलकला पुरास्थल

3. दक्षिण–पूर्वी राजस्थान

4. दक्षिण–पश्चिमी राजस्थान

5. उत्तर–पश्चिमीराजस्थान

.....

पृष्ठभूमि

प्रस्तुत 'राजस्थान की शैलचित्रकला' विषयक ग्रंथ प्रमुख रूप से चित्रांकित शैलाश्रयों की खोज हेतु किये गये अन्वेषण (एक्सप्लोरेशन) का परिणाम है। ताम्रपाषाण युगीन पुरास्थल गणेश्वर (सीकर, राजस्थान) के पुरातात्त्विक उत्खनन के दौरान किये गये अन्वेषण में पुरातात्त्विक जमावों के निकट स्थित कतिपय शैलाश्रयों में चित्रांकन प्राप्त हुआ था। चित्रित शैलाश्रयों की यह खोज इस क्षेत्र में नवीन एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इससे मुझे प्रोत्साहन मिला और मैंने लगभग सम्पूर्ण प्रदेश में चित्रित शैलाश्रयों को ढूँढ़ निकालने के लिए व्यापक अन्वेषण की योजना बनाई। इस दौरान मुझे ग्रेनाइट चट्टानों की पहाड़ियों में अनेक स्थलों पर खनन किये जाने के संयत्र लगे हुए मिले, जिससे यह स्पष्ट अनुभव हुआ कि यह पुरासम्पदा शीघ्र ही विलुप्त हो जायेगी। अतः इनके संरक्षण हेतु इनका प्रलेखन, रेखांकन, छायाचित्र एवं अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए पर्याप्त संसाधन चाहिये, जिनका मेरे पास व्यक्तिगत रूप से नितांत अभाव था। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली, ने इस कार्य हेतु मुझे सहयोग दिया जिसके लिए मैं विनम्रतापूर्वक विशेष रूप से शैलकला प्रभाग का आभारी हूँ, जिनके उचित मार्गदर्शन से यह कार्य इस प्रकृति के रूप में सम्पादित हो सका। डॉ. बी. एल. मल्ला के निर्देशन में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दल ने राजस्थान के चम्बल नदी घाटी के गहन वन्य प्रदेश में स्थित चित्रांकित शैलाश्रयों का प्रलेखन कार्य अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए सम्पादित किया है। चित्रित शैलाश्रयों के इस प्रलेखन कार्य में विविध विषय विशेषज्ञों यथा कलामर्मज्ञ, इतिहासकार, भूतत्वविज्ञानी, भूगोलवेत्ता, मानवविज्ञानी, समाजविज्ञानी, जीवविज्ञानी एवं पुरातत्त्ववेत्ता को सम्मिलित कर उनका उसी परिप्रेक्ष्य में समुचित अध्ययन किया गया है। यद्यपि चित्रांकित शैलाश्रयों के अध्ययन की यह विधा सम्पूर्ण राजस्थान के संदर्भ में पूर्ण नहीं की जा सकी है लेकिन जितना संभव हुआ है वह सामग्री इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस ग्रंथ हेतु उपलब्ध करवा दी है। केन्द्र के प्रति किसी भी प्रकार का आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता है। इस ग्रंथ में 'राजस्थान की शैलचित्रकला' का निम्नानुसार आठ अध्यायों में वर्णन किया गया है –

प्रथम अध्याय में राजस्थान की प्राकृतिक संरचना के विषय में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवायी गयी है। राजस्थान की देश के संदर्भ में विशिष्ट स्थिति तथा इसके भौतिक प्रभागों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। मध्यवर्ती भाग में अरावली पर्वत श्रृँखला के पश्चिम में विशाल मरूस्थल एवं दक्षिण–पूर्वी भाग में पठारी भू–भाग की विशिष्टताओं को उद्धृत किया गया है। राजस्थान भूतात्त्विक दृष्टि से अतिप्राचीन आर्कियन चट्टानों एवं विविधताओं युक्त तथा नवीनतम चट्टानों एवं स्तरों से परिपूर्ण है। राजस्थान की अपवाह प्रणाली को भूगर्भिक संरचना ने बहुत प्रभावित किया है जिसमें अरावली पर्वत श्रृँखला तथा महान भारतीय जल विभाजक रेखा महत्वपूर्ण कारक हैं। इस जल विभाजक रेखा ने राजस्थान की नदियों के जल को दो भागों में विभक्त किया है पूर्वी भाग का जल बंगाल की खाड़ी में और पश्चिमी भाग का अरब सागर में जाता है। इन नदियों का मानव इतिहास पर गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी प्रकार उत्तर–पूर्वी राजस्थान की अपवाह प्रणाली भी महत्वपूर्ण है। यहाँ अन्तः अपवाही है। इसका परिणाम समीपवर्ती क्षेत्रों से इसकी संलग्नता को न केवल घनिष्ट बनाता है अपितु

विभिन्नकालों में अनेक पुरातात्त्विक संस्कृतियों के आव्रजन और परिव्रजन की ओर संकेत देता है। इस क्षेत्र से ज्ञात विभिन्न काल के पुरास्थल भी इसकी पुष्टि करते हैं। ताम्र खनिज बहुल क्षेत्र होने के कारण यहाँ से सिन्धु–सरस्वती सभ्यता एवं परवर्ती ताम्र निधि गेरूएँ पात्र संस्कृति के गांगेय उपत्यका क्षेत्र में ताम्र आपूर्ति की दृढ़ अवधारणा गणेश्वर के उत्खनकों ने व्यक्त की है।

वायुमण्डल की विशिष्टताओं के कारण राजस्थान की जलवायु प्रमुख रूप से मरूस्थलीय जलवायु है क्योंकि इसका उत्तरी एवं पश्चिमी भाग मरूस्थलीय भूभाग है लेकिन उत्तर–पूर्वी भाग अर्द्धशुष्क जलवायु का क्षेत्र तथा दक्षिणी भाग उप आर्द्र जलवायु का क्षेत्र है और इसके बाँसवाड़ा, झालावाड़ एवं बाराँ जिले आर्द्र जलवायु के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इस अध्याय में राजस्थान की वनस्पतिक सम्पदा के साथ वन्यजीवों एवं जैवविविधता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। इनके साथ पर्वतीय एवं वन्यप्रदशों में निवास करने वाले मानव समुदायों यथा–भील, गरासिया, मीणा, सहरिया, डामोर, सांसी, कंजर आदि जनजातियों का उनकी विशिष्टताओं के अनुसार विवरण उपलब्ध करवाने का प्रयत्न किया गया है।

द्वितीय अध्याय में राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विस्तारपूर्वक विवरण प्रस्तुत किया गया है। शैलाश्रयों की पार्श्वभूमि से और उनके निक्षेप से भी पुरापाषाण काल से आरंभ होकर ऐतिहासिक काल तक पुरातात्त्विक संस्कृतियों के एक अनवरत क्रम की पुष्टि हमारे अन्वेषण और सर्वेक्षण से होती है यद्यपि शैलाश्रयों की चित्रकला तथा उससे जुड़ी उत्खचन कला (पेट्रोग्लिफ एवं अश्मनिकष) का सह–सम्बन्ध और पूर्वापर क्रम ज्ञान की वर्तमान अवस्था में निश्चयात्मक रूप से निर्धारित करना दुष्कर है। नवपाषाण युग का पाषाण उपकरण राजस्थान क्षेत्र से अप्राप्य है लेकिन सांस्कृतिक तौर पर अनेक शैलाश्रयों में पशुपालन से संबंधित चित्र भी उपलब्ध हुए हैं तथा मृद्भाण्ड़ों एवं अन्य पुरावशेषों के आधार पर कृषि कर्म भी किये जाने के साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। आद्यैतिहासिक कालीन मानव समुदाय का संकेन्द्रण प्रमुख रूप से कृषि हेतु उपजाऊ भूभाग का क्षेत्र रहा है। इस दृष्टि से उत्तरी राजस्थान में प्रवाहित होने वाली तत्कालीन सदानीरा सरस्वती नदी क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा है जहाँ अनेक सम्पन्न बस्तियों के पुरावशेष दृष्टिगत होते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण इन सम्पन्न बस्तियों के पश्चात् अन्य जगहों पर छोटी–छोटी ग्रामीण बस्तियाँ दिखाई देती हैं जो ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ एवं अन्य पात्र संस्कृतियाँ कहलाती हैं। छटी शताब्दी ई.पू. में ये बस्तियाँ जनपदों–महाजनपदों के रूप में स्थापित होती हैं जिनका क्रमबद्ध एवं लिपिबद्ध इतिहास उपलब्ध होने लगता है।

तृतीय अध्याय में शैलचित्रकला की खोज एवं अध्ययन का व्यापक सर्वेक्षण किया गया है। यह त्रि–आयामी है – विश्व परिप्रेक्ष्य, भारतीय परिप्रेक्ष्य एवं राजस्थान परिप्रेक्ष्य। राजस्थान के शैलाश्रयों की खोज के दौरान हमने तीन अध्ययन पद्धतियों का सहारा लिया है – प्रथम विस्तृत डायरी नोट, विवरण, निरीक्षण, दूसरा– फोटोग्राफ एवं पारदर्शियाँ (ट्रान्सपेरेन्सीज) और तीसरा– आरेखण (स्केच)। छायाचित्र स्केल के साथ लिये गये किन्तु आरेखण स्केल से नहीं हैं। रेखाचित्रों को पारदर्शियों के प्रक्षेप (प्रोजेक्शन) से बनाया गया है, अस्तु वे स्केल पर हैं

और सटीक हैं। इन्फ्रारेड छायाचित्र, उत्खनन या अन्य प्रचलित वैज्ञानिक पद्धतियों का समावेश साधन और समय सीमा की विवशता के कारण संभव नहीं हो सका है।

चतुर्थ अध्याय में चित्रित शैलाश्रयों का क्षेत्रशः विवरण है। सम्पूर्ण राजस्थान को चार भागों, 1. उत्तर–पूर्वी राजस्थान, 2. दक्षिण–पूर्वी राजस्थान, 3. दक्षिण–पश्चिमी राजस्थान एवं 4. उत्तर–पश्चिमी राजस्थान में विभक्त किया गया है। इन चारों भागों के भौगोलिक परिवेश एवं जलवायु में पर्याप्त भिन्नता है। राज्य के इन चार भागों में एक से अधिक जिले सम्मिलित हैं। शैलाश्रयों के अध्ययन की दृष्टि से जिले का एक 'क्षेत्र' स्वरूप माना गया है, इसे रोमन अंको I, II, III, IV..... से अभिहित किया गया है। जिलों (क्षेत्रों) में अनेक पुरास्थलों पर अनेक चित्रित शैलाश्रय उपलब्ध हुए हैं इन पुरास्थलों को 'समूह' अंग्रेजी वर्णमाला A, B, C,D..... द्वारा प्रदर्शित किया गया है। 'समूह' के विशेष शैलाश्रय को क्रमांक 1, 2, 3, 4..... आदि द्वारा नामांकित किया गया है। अतः राजस्थान के किसी भाग (1, 2, 3, 4) में स्थित विशेष शैलाश्रय को जिला (क्षेत्र) विशेष (I, II, III, IV.....) के पुरास्थल (चित्रित शैलाश्रयों का समूह) A, B, C, D.....का शैलाश्रय 1, 2, 3, 4..... आदि से अभिव्यक्त किया गया है। यह वर्गीकरण अध्ययन के सुभीते और सटीक संदर्भ देने को ध्यान में रखकर किया गया है।

शैलाश्रयों का विवरण उनकी पहुँच, सटीक भू–स्थिति (अक्षांश एवं देशान्तर) स्थानीय नाम, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, नाप–जोख (लम्बाई, चौड़ाई–गहराई–ऊँचाई) दिक्स्थापन, निक्षेप, पार्श्वक्षेत्र के पुरास्थल आदि के विशिष्ट संदर्भ में किया गया है। अध्याय के अन्त में दो परिशिष्ट हैं। प्रथम में चित्रित शैलाश्रयों का क्षेत्रशः वर्गीकरण पहुँच एवं भूस्थिति है तथा द्वितीय परिशिष्ट में चित्रित–अचित्रित शैलाश्रयों का सांख्यिकीय विवरण है।

पंचम अध्याय में शैलचित्र कला के तकनीकी पक्ष का विस्तृत विवेचन किया गया है। चित्रांकन हेतु प्रयुक्त रंग योजना, चित्रेत्तर उत्खचन, अध्याच्छादन, पैटिनेशन, एनक्रस्टेशन और शैली के क्षेत्रानुसार विवरण के साथ आन्तरिक एवं बाह्य क्षेत्रों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

षष्टम अध्याय वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं विस्तीर्ण है। इसमें राजस्थान के चारों भागों के क्षेत्र (जिला), समूह (पुरास्थल) शैलाश्रय क्रमांकशः समस्त चित्रों, चित्र–समूहों, उत्खचन, अश्मनिकष आदि की स्थिति तथा रचना–रंग–तकनीक आदि विविध पक्षों का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में उन चित्रों का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जिनका अंकन उन शिलाओं की सतह पर किया गया है जिन्हें तकनीकी दृष्टि से शैलाश्रय कहना कठिन हो सकता है। ग्रेनाइट के बड़े या छोटे शिलाखण्ड कई बार इस तरह जमा हो गये हैं कि उनके बीच कुछ जगह निकल आती है जिस पर भी चित्रांकन किया गया है। चित्रण के अभिप्रायों को स्पष्ट करने के लिए कल्पना और परिकल्पना दोनों का सहारा लिया गया है और उनकी परिपुष्टि तर्क द्वारा किये जाने का प्रयास भी किया गया है अस्तु प्रस्तावित अभिप्राय नितांत व्यक्तिपरक नहीं है। अध्याय के अन्त में एक परिशिष्ट है जिसमें चित्रांकन में प्रयुक्त रंग एवं तकनीक के साथ प्रत्येक चित्रांकित शैलाश्रय में स्थित चित्रण अभिप्राय का उल्लेख किया गया है।

सप्तम अध्याय में राजस्थान की शैलकला की प्राचीनता का निर्धारण करते हुए संभावित कालक्रम के आंकलन करने का प्रयास किया गया है।

अष्टम अध्याय (शैलाश्रयों से सम्बद्ध पुरातात्त्विक सामग्री) में चित्रांकित शैलाश्रयों से तथा निकट स्थित पुरास्थलों से प्राप्त, संकलित सामग्री (सतह, नदी तट, पर्वतों के ढ़लान से संकलित) प्रभूत है एवं एक स्वतंत्र ग्रंथ का विषय है। प्रस्तुत ग्रंथ में उसके विवरण का समावेश संकेतात्मक है। जब तक शैलाश्रयों में स्थित निक्षेप का वैज्ञानिक उत्खनन नहीं होता तब तक पार्श्व क्षेत्र की पुरासंस्कृतियों से उनकी सटीक तुलना नहीं की जा सकती। संप्रति पार्श्व क्षेत्र की पुरासंस्कृतियों की रूपरेखा इस अनुमान से प्रस्तुत की गई है कि शैलाश्रयों की चित्रकला या शैलकला में इन पुरासंस्कृतियों के निर्माताओं का कुछ न कुछ योगदान अवश्य रहा होगा। अध्याय के अन्त में एक परिशिष्ट–'चित्रित शैलाश्रयों के समीपवर्ती क्षेत्र से प्राप्त पुरासामग्री एवं संभावित कालक्रम' है।

प्रस्तुत ग्रंथ में यथास्थान मानचित्र, छायाचित्र एवं आरेख प्रस्तुत कर वस्तुनिष्ठ विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। चित्रांकित शैलाश्रयों की खोज हेतु किये गये परिमार्गण में डॉ. एम. एल. मीना, डॉ. वी. गोधल, सुरज्ञानी, जे. आर. मीना, सी. आर. तंवर का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मैं इनका आभारी हूँ। अन्वेषण के परिणामस्वरूप यह अनुभव हुआ कि सम्पूर्ण राजस्थान के शैलाश्रयों का व्यापक अध्ययन एवं विश्लेषण को एक ग्रंथ में समेटना असंभव है। इसका अनुभव चम्बल नदी घाटी स्थित चित्रांकित शैलाश्रयों का जो अध्ययन इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है, से स्पष्ट हो जायेगा। चम्बल क्षेत्र में चित्रित शैलाश्रयों की बहुसंख्या है, उनके विस्तृत अध्ययन हेतु पृथक रूप से योजना का निर्माण करने की आवश्यकता है। कतिपय क्षेत्रों में अभी और सर्वेक्षण की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में ओ. पी. शर्मा द्वारा अनेक चित्रांकित शैलाश्रयों को खोज निकाला गया है। उनके सहयोग एवं स्नेह के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। गुरूवर श्री आर. एस. मिश्र मेरे लिए एक स्थायी प्रकाश स्तंभ स्वरूप मनीषी हैं उनके अगाध ज्ञान से परिपूर्ण एवं तेजस्वी मार्गदर्शन के बिना यह ग्रंथ लेखन का कार्य लगभग असंभव था उनके प्रति किसी तरह के आभार की अभिव्यक्ति मात्र औपचारिकता होगी। मेरे सहयोगी एवं आत्मीय बंधु प्रो. के. जी. शर्मा के प्रेरक मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हूँ। डॉ. बी. एम. पाण्डे ने ग्रंथ की पाण्डुलिपि का गहन अवलोकन किया एवं इसे परिष्कृत कर इस स्तर का स्वरूप प्रदान किया, उनके प्रति सादर नमन। पुनश्च, इस ग्रंथ के प्रणयन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

डॉ. मुरारी लाल शर्मा